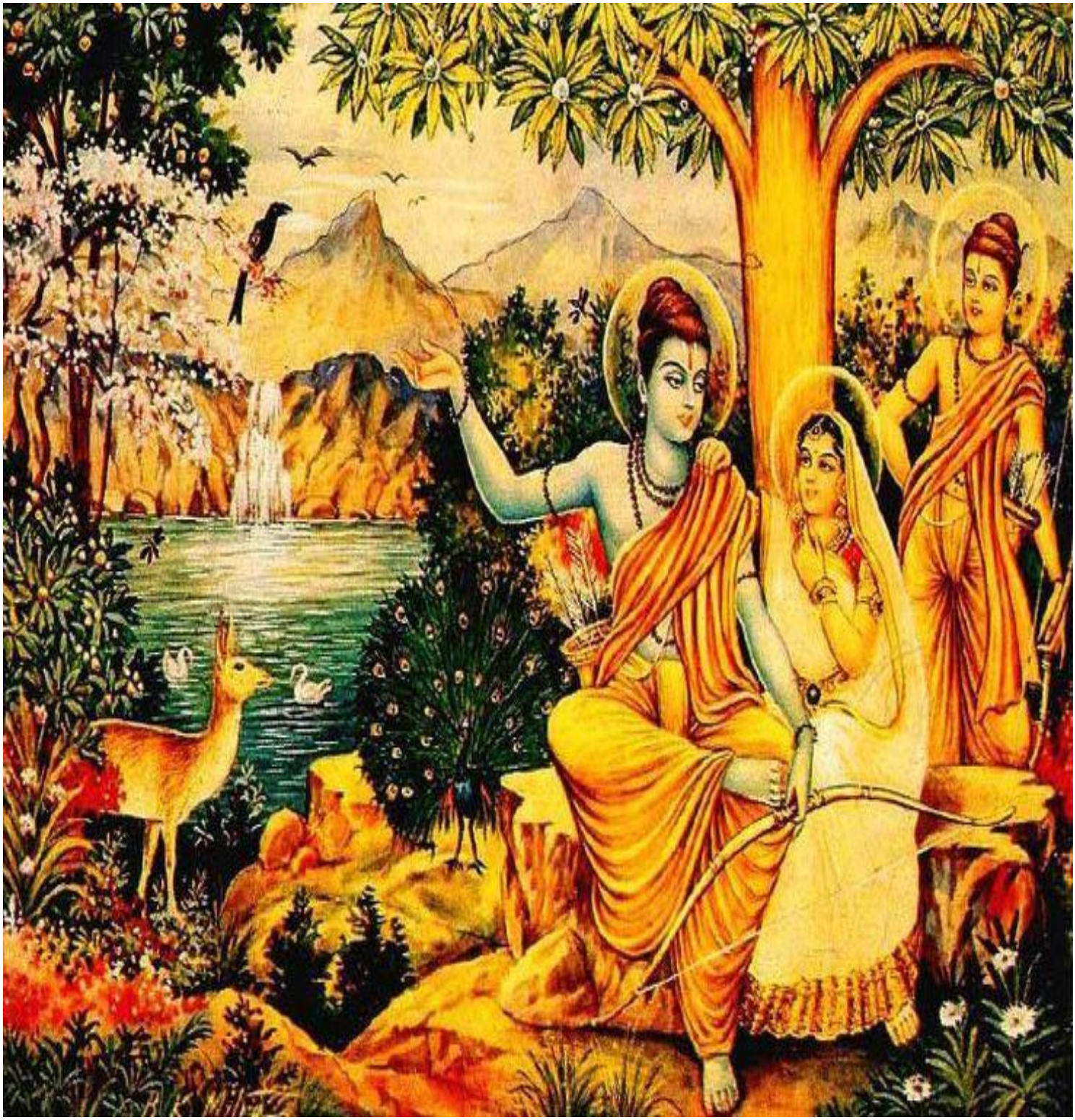

B. K. Mitra

Chitrakuta mahatmya

श्रीसीतेशसमारम्भां श्रीशुकाचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्देगुरुपरम्पराम्॥१॥
सीतारामपदाम्भोजैरङ्किता यद् वसुन्धरा ।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम्।।
मञ्जमन्दाकिनी यत्र राजते भक्तिमुक्तिदा ।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम्॥
रम्या विहारभूमिश्च यत्रास्ति रामसीतयोः ।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम्॥
यस्मिनश्च श्रयूते नित्यं कथा कीर्त्तनर्त्तजो ध्वनिः।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम॥
लभते यत्र वासाद्धि पुरुषार्थचतुष्टयम्।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम।।
सदैव सेव्यतेयश्च दैवैः सिद्धैर्महर्षिभिः।
तस्मै चित्रप्रभावाय चित्रकूटाय मङ्गलम्॥
द्वारपीठाधिपश्रीमत् सुखानन्द विनिर्मितम।

मङ्गलं भवताद् एतत् पठतां मङ्गलप्रदम॥

इति जगद्गुरु रामानंदाचार्य सुरसुरानन्दाचार्य कृत चित्रकूट मंगलम् संपुर्णम्।

आदि रामायण से उद्धृत

यथा प्रमोदविपिनं नित्यं प्रियतम् मम्।

तथैव सर्वशोभाट्यश्चित्रुकुटाद्रि प्रियो मम्।।

Shri Ram said

Like Pramodvan is always dear to me, similarly the mountain Chitrukuta is dear to me with all its beauty

जैसे प्रमोदवन मुझे सदैव प्रिय है, वैसे ही चित्रकुट पर्वत अपनी संपूर्ण सुंदरता के साथ मुझे प्रिय है

यथा प्रमुद्वनं त्यक्त्वा नैमि क्षणमपि क्वचिद्।

तथैव चित्रुकुटाद्रि न जहामि कदाचन्।।

Like I never leave pramodvan and going anywhere for a moment

In the same way I never leave Chitrukuta mountain

जैसे मैं प्रमोदवन को छोड़कर एक क्षण के लिए भी कहीं नहीं जाता इसी प्रकार मैं चित्रकुट पर्वत को कभी नहीं छोड़ता

न मे वैकुंठभवनं श्वेतद्वीपम् अपि प्रियम्।

रमाभवनम् एव अपि यथा मे कामता प्रिया।।

शिलातलेषु अधिष्ठाय चित्रकूटगिरेः सदा।

विहरामि दधत्केलिं देवानाम् जनयन् मुदम्।।

I do not like the Vaikuntha Bhavana or the White Island, Even the house of Rāma is as dear to me as my desire. Sitting on the rocky bottoms of mount Chitrakuta I enjoy playing with the gods causing them joy

मुझे वैकुंठ भवन या श्वेत द्वीप पसंद नहीं है, यहां तक कि रमा का घर भी मुझे मेरी इच्छा के समान प्रिय है। मुझे चित्रकुट पर्वत की पथरीली तलहटी पर बैठकर देवताओं के साथ खेलने और उन्हें आनंदित करने में आनंद आता है

किं तस्य बहुभिः यज्ञैः प्रादक्षिण्येन वा भुवः।

यश्चित्रकुटं सततं सेवते सुखवर्द्धनम्।।

What is the use of his many yagyas or circumambulation of the earth? He who constantly worships Chitrakuta enhances happiness

उनके अनेक यज्ञों अथवा पृथ्वी की प्रदक्षिणा से क्या प्रयोजन? जो निरन्तर चित्रकुट की पूजा करता है, वह सुख बढ़ाता है

यो दुरात् पश्यति गिरेः श्रृंगाणि खलु कौतुकात्।
तस्य देहात् पलायन्ते पातकानि महान्त्यपि।।

He who looks at the chitrakuta mountain from afar with curiousity, even the greatest sins flee from his body.

जो दूर से जिज्ञासापूर्वक चित्रकुट पर्वत को देखता है, उसके शरीर से बड़े-बड़े पाप भी भाग जाते हैं।

स्पृष्ट्वा तु चित्रकुटस्य श्रृगं नभसि विस्तृतम्।
अनन्तकोटितीर्थेषु स्नातो भवति तत् क्षणात्।।

Touching the peak of Chitrakuta tree spread out in the sky, He is bathed in infinite crores of holy places instantly.

आकाश में फैले हुए चित्रकुट वृक्ष के शिखर को छूकर वह अनन्त कोटि तीर्थों में तत्क्षण स्नान करा देता है।

दत्ता स्यु कोटिशो गावः स्नाता स्युतीर्थकोटयः।
कृता स्युः कोटिशो यज्ञा योऽत्र यात्रामनुव्रजेत्।।

Crores of cows will be given and crores of holy places will be bathed, Whoever goes chitrakuta pilgrimage will have performed crores of sacrifices

करोड़ों गायें दान की जाएंगी, करोड़ों तीर्थों का स्नान कराया जाएगा, जो भी व्यक्ति चित्रकूट तीर्थ पर जाएगा, उसने करोड़ों यज्ञ किए होंगे

अत्र वाति सदा वायुः सीतांगस्पर्शसौरभी।

यं स्पृष्ट्वा लभते मर्त्यो जीवन्मुक्तिम् अनुत्तमाम्।।

The wind blows here in chitrakuta is always fragrant with the touch of Sita's body. By touching wind, a mortal attains the supreme liberation while living.

यहाँ चित्रकुट में चलने वाली हवा सदैव सीता के शरीर के स्पर्श से सुगंधित रहती है। वायु का स्पर्श करके प्राणी जीवित रहते हुए ही परम मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

यत् किञ्चित् कुरुते चात्र सुकृतं कर्ममानवः।

गिरिराज प्रभावेण तद् अनन्तगुणं भवेत्।।

And whatever a man does here in chitrakuta is a good deed. By the influence of the king of the mountains, that will become infinitely virtuous.

और यहां चित्रकुटा में एक आदमी जो भी करता है, वह अच्छा काम है। पर्वतराज के प्रभाव से वह अनन्त पुण्यात्मा हो जायेगा।

बृहद् रामायण से उद्धृत

चित्रुकुटो गिरिश्रेष्ठः श्रीरामपद भुषितः।
यस्मिन् श्री जानकीनाथो रमे सर्वदैव हि।।

भगवान श्री राम के चरणकमल से विभुषित, गिरियों में श्रेष्ठ जो चित्रकुट पर्वत है जिनके विषय श्रीजानकीनाथ सदा रमण करते हैं।

Chitrakut mountain, adorned with the lotus feet of Lord Shri Ram, is the best among the hills, about which Shri Janakinath always rejoices.

चित्रुकुटो गिरिश्रेष्ठः श्रीरामपद भुषितः।
मन्दाकिनी नाम नदी यत्र पाप प्रमोचनी।।

भगवान श्री राम के चरणचिन्ह से विभुषित तथा पर्वतों में श्रेष्ठ चित्रकूट पर्वत है जहां संपुर्ण पापों का नाश करनेवाली मन्दाकिनी नदी बहती है।

Chitrakoot mountain is the best among the mountains and is blessed with the footprints of Lord Shri Ram, where the Mandakini river flows which destroys all sins.

चित्रकूट महातीर्थं परं निर्वाण कारणं।
तीर्थानां परम् तीर्थम् मंगलानाञ्च मंगलम्।।

श्री चित्रकूट पर्वत महा तीर्थ है उत्तम मोक्ष प्रदान करने वाला, तीर्थों में परम तीर्थ तथा मंगलों में भी महामंगल है।

Shri Chitrakoot Mountain is a great pilgrimage site which provides the best salvation, the ultimate pilgrimage among pilgrimages and is the most auspicious among auspicious places.

चित्रकूट समं नास्ति तीर्थं ब्रह्माण्डगोलके।

यत्र श्रीरामचन्द्रऽसौ सीतया सहित सुधीः।।

श्री चित्रकूट पर्वत के समान तीर्थ पुरे ब्रह्माण्ड में नहीं है जहां श्रीसीता जी के सहित श्रीराम रमण करते हैं।

There is no pilgrimage place in the entire universe like Shri Chitrakoot Mountain where Shri Ram along with Shri Sita ji resides.

चित्रकूट प्रभावेण वासुदेवो जनार्दनः।

साहाय्यम् अकरोत् तस्य पाण्डवस्य परात्परः।।

श्री चित्रकूट पर्वत के प्रभाव से ही वासुदेव कृष्ण ने पाण्डवों का सहायता किया।

It was due to the influence of Shri Chitrakoot Mountain that Vasudev Krishna helped the Pandavas.

एवम् प्रभावो भगवान् चित्रकूट गिरीश्वरः।

यस्य दर्शन मात्रेण हरिश्चित समाविशतः।।

श्री चित्रकूट पर्वत के दर्शन मात्र के प्रभाव से ही मनुष्य श्रीभगवान में सम्माहित हो जाता है।

By the mere sight of Shri Chitrakoot mountain, a person gets absorbed in Shri Bhagwan.

अचलं चित्रकूटं च मनो वाञ्छा फलं लभेत्।

अस्मिन् क्षेत्रे महापुण्ये धर्मकामार्थमोक्षदे।।

जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष देनेवाली श्री चित्रकूट पर्वत का ध्यान करते हैं, वह जीव का मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

One who meditates on Shri Chitrakoot Mountain, which gives religion, wealth, lust and salvation, gets the desired results of the soul.

क्षेत्रं श्री चित्रकुटाख्यं पालिष्यामि सर्वदा।

यस्मिन् मृतान् जीव गणान् वैकुंठम् प्रेष्यामि च।।

महादेव कहते हैं ये चित्रकूट नामक क्षेत्र को हमेशा पालन करते हैं और यहां पे जो जीव मरते हैं उनको हम वैकुंठ भेजेंगे।

Mahadev says that they always follow the area called Chitrakoot and we will send the living beings who die here to Vaikuntha.

चित्रुकुट स्थितं रामं जानकी लक्ष्मणान्वितः।

ब्रह्मरूद्रमहेन्द्रादि मुनि सिद्ध निवेसितम्।।

ध्यात्वा नीलोत्पल श्यामं तस्मिन् तीर्थे वरे स्थितः।

चित्रकूट में विराजमान ब्रह्मा,रुद्र, महेंद्र आदि देवताओं, मुनियों और सिद्धों से सेवित सीता जी तथा राम जी के अनुज लक्ष्मण जी के संयुक्त श्याम सुंदर शरीर वाले श्री राम जी का ध्यान करते हुए तीर्थों में श्रेष्ठ है।

Meditating on Shri Ram ji, who has a dark and beautiful body combined with Sita ji, Ram ji's younger brother Lakshman ji, served by Gods, sages and Siddhas, Brahma, Rudra, Mahendra etc. seated in Chitrakoot, is the best among pilgrimages.

रामभक्तिं प्राप्नुवन्ति चित्रुकुटेति नामतः।

कामदेति च नाम्ना वै सर्वान् कामान्वाप्नुयात्।।

जो प्राणी केवल चित्रकूट चित्रकूट ऐसा नाम लेता है, उसे सबसे दुर्लभ रामभक्ति मिलता है तथा कामदा नाथ कहकर जप करता है, उसकी सारी कामनाएं प्राप्त हो जाता है।

The person who only takes the name Chitrakoot Chitrakoot, gets the rarest devotion of Ram and chants Kamada Nath, all his wishes are achieved.